



ग्रेड: 10वीं, सिविल इंजीनियरिंग (सिविल इंजीनियरिंग)



पाठ: 4 अक्टूबर उत्तर: परिणाम/उपलब्धियाँ

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों या एक वाक्य में दीजिए:

(1) भारतीय नागरिक जाति के आधार पर समानता का अधिकार किस दस्तावेज के अनुसार और कब अस्तित्व में आया?

उत्तर: भारतीय नागरिकों के ये अधिकार जाति के आधार पर समानता का अधिकार 26 जनवरी 1950 को भारत के संविधान में निहित किया गया था।
संविधान के अनुच्छेद 14 से 16 में निहित हैं।

(2) कौन सी राजनीतिक व्यवस्था नागरिकों की बुद्धि पर आधारित है?

उत्तर: लोकतांत्रिक प्रक्रिया नागरिकों की बुद्धिमत्ता पर आधारित होती है।

(3) आधुनिक समय में कितने देशों ने "जनजाति" शब्द को अपनाया है?

उत्तर: विश्व में लगभग 100 देशों ने लोकतांत्रिक प्रणाली अपनाई है।

(4) वर्ष 2000 से अब तक कितने वर्ष ऐसे बीत चुके हैं जब राज्य में कोई महिला शासक नहीं रही?

उत्तर: वर्ष 2000 तक विश्व के लगभग एक चौथाई देशों में लोकतांत्रिक सरकार लागू नहीं थी।

(5) भारतीय भाषा की उत्पत्ति के बारे में कौन सा कथन सही नहीं है?

(i) भारतीय लोकतंत्र ने प्रत्येक नागरिक के ज्ञान में वृद्धि की है।

(ii) भारत ने लोकतंत्र को अपनाकर जातिवाद को खत्म करने की कोशिश की है। (iii) लोकतंत्र के कारण भारतीयों में सांप्रदायिक
सद्भाव बढ़ा है।

(iv) अधिभोगी में दोषों की मरम्मत नहीं की जा सकती।

उत्तर-(iv) सड़क में आई खराबी की मरम्मत नहीं की जा सकती।

(6) जानवर को ओकुटुंटा क्यों कहा जाता है?

(i) निर्णय लोगों की इच्छा के अनुसार लिए जाते हैं।

(ii) निर्णय एक बार में लिए जाते हैं।

(iii) निर्णय विचार-मंथन समूह द्वारा लिए जाते हैं।

(iv) निर्णय एक ही चरण में लिए जाते ^{ओह} वे जाते हैं।

हैं। उत्तर-(iii) निर्णय बिना चर्चा के लिए जाते हैं।

(7) सर्वेक्षण के परिणामों की भविष्यवाणी करने के लिए किस कथन का उपयोग किया जाता है?

(i) स्वतंत्र और पारदर्शी चुनाव (ii) व्यक्तिगत शक्ति

(iii) बहुमत का नियम उत्तर-(ii)

(iv) कानून के सामने बुद्धिमत्ता

व्यक्तिगत शक्ति

(8) निम्नलिखित में से कौन सा ओकुटन विधि का सबसे महत्वपूर्ण भाग है?

(i) उच्च रक्तचाप (ii) रचनात्मक सोच (iii) स्वतंत्र सोच उत्तर-(i) उच्च रक्तचाप

(iv) आर्थिक बुद्धिमत्ता

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर क्रम से दीजिए -

(1) लोगों (नागरिकों) का उच्च नैतिक मानक कानून के शासन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता कैसे है?

उत्तर: लोकतंत्र की स्थिरता के लिए नेताओं और नागरिकों का उच्च नैतिक आदर्श एक आवश्यक तत्व है क्योंकि उच्च नैतिक आदर्श वाले लोग ही लोकतंत्र को शुद्ध और स्थिर बना पाएंगे। अगर देश की जनता, राजनेता और शासक सरकार पर भरोसा करते हैं,

यदि वे ऐसा करेंगे तो अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जायेगी।

(2) विश्व में राक्षसों के दो सबसे सामान्य प्रकार कौन से हैं?

उत्तर: संवैधानिक संकट, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव (2) क्या देश के लोगों की आर्थिक

स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है?

उत्तर- नहीं, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था आर्थिक अस्थिरता का सीधे तौर पर समाधान नहीं कर सकती। लेकिन यह शासन व्यवस्था लागू कर सकती है

ऐसी नीतियाँ बना सकते हैं जो आर्थिक असुरक्षा को कम करने में सहायक हो सकती हैं। (4) क्या यह कथन सत्य है कि तीनों धर्मों की एकता से एकता प्राप्त होती है?

उत्तर भारत विविध धर्मों, जातियों, नस्लों और संस्कृतियों का घर है।

वे एक लोग हैं। उनकी भाषाएँ और रीति-रिवाज़

जी-ए भारतीय संविधान निर्माताओं ने इन सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, जाति के लोगों को अपनी संस्कृति को संरक्षित करने की अनुमति देकर एकता स्थापित करने का

भारतीय संविधान ने सभी धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के लिए अवसर प्रदान किए हैं।, प्रयास किया।

भारत दुनिया के उन देशों में से एक है जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के लोग रहते हैं।

यह एक उदाहरण के रूप में सामने आया है। भारतीय लोकतंत्र ने विदेशियों के उस डर को दूर कर दिया है जो कभी सोचते थे कि भारतीय लोगों के बीच मतभेद भारत को एक राष्ट्र तक सीमित नहीं रहने देंगे।

(5) स्त्री अंग की शुद्धता का आकलन करने के कोई दो तरीके सुझाइए।

उत्तर- 1. क्या चुनाव निष्पक्ष, स्वतंत्र और पारदर्शी तरीके से हो रहे हैं ?

2. क्या नागरिकों को उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है? (6) वर्तमान व्यवस्था

के आर्थिक परिणाम क्या हैं?

उत्तर- 1. सत्तावादी शासन में आर्थिक विकास दर विकसित देशों की तुलना में थोड़ी ज़्यादा होती है। लेकिन जब हम विकसित देशों के आर्थिक विकास रिकॉर्ड की तुलना गरीब देशों से करते हैं, तो हमें ज़्यादा अंतर नज़र नहीं आता।

2. बाकी दुनिया घोर असमानता की स्थिति में है। दक्षिण अफ्रीका और ब्राज़ील की हालत सबसे खराब है। आबादी का सबसे निचला 20% हिस्सा देश की आय का केवल 3% ही कमा पाता है। गरीब देशों के किसी विकसित देश में, जनसंख्या के सबसे धनी 20% लोगों के पास देश की 60% संपत्ति होती है। नागरिक ही वे लोग हैं जिनके पास अपनी ज़रूरत की चीज़ें पाने के साधन हैं।

उपलब्धता को लेकर भी अनिश्चितताएं हैं।

(ग) इन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए -

1. भारतीय शास्त्रीय संस्कृति में महिलाओं की स्थिति कैसी थी?

उत्तर: भारतीय संविधान निर्माताओं ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अफ्रीका, इंग्लैंड, कनाडा, स्विट्ज़रलैंड आदि जैसे दुनिया के विकसित देशों ने महिलाओं को भारत की तुलना में बहुत बाद में अधिकार दिए।

महिलाओं को समान कर का भुगतान किया जाता है, लेकिन 26 जनवरी 1950 को भारत में संविधान लागू होने के बाद से न तो महिलाओं और न ही पुरुषों को समान अधिकार दिए गए हैं।

महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार तो दिए ही गए, साथ ही महिलाओं का राजनीतिक दर्जा और सम्मान भी बढ़ा है। अब महिलाएँ जीवन के हर पहलू में योगदान दे रही हैं। महिलाओं की राजनीतिक संस्कृति

भी बढ़ी है। भारतीय क्रांति ने सदियों से चली आ रही खाई को पाटकर महिलाओं की गरिमा को स्थापित किया।

हों।

(2) भारतीय नागरिकों में राजनीतिक चेतना कैसे विकसित हुई?

उत्तर- 1. लोग अपने अधिकारों का सम्मान नहीं करते। अगर उनके अधिकारों का सम्मान ^{ओह} वे ज़्यादा जागरूक हो गए हैं। अधिकारियों का उदय ^य ज़्यादा नहीं। ^य दोस्त नहीं.

किया जाए, तो 2. भ्रष्टाचार की संस्कृति बहुत बदल गई है और अब लोग ^य यदि यह घना है, तो पक्षी इसे उठा लेते हैं।

भ्रष्ट व्यक्तियों की गतिविधियों को स्वीकार करने में संकोच नहीं करते। ^य

करना।

3. प्रत्येक चुनाव प्रक्रिया के साथ लोगों की राजनीतिक भागीदारी और चुनावों में उनकी रुचि बढ़ती जा रही है। गुणात्मक दृष्टिकोण से भी लोगों की चुनावों में रुचि बढ़ रही है।

4. राजनेताओं के कार्य जनता की इच्छा के अनुरूप नहीं हैं। जनता उनकी मांगों से संतुष्ट नहीं है। ^{ओह} अस्वीकार कर दिया

जाता है।

5. एक समय था जब केंद्र सरकार ने अनुच्छेद 1944 के तहत राज्यों में अपने स्वयं के संविधान के रूप में प्रतिद्वंद्वी सरकारें स्थापित की थीं।

वे -356 का उपयोग करके कानून तोड़ते थे, लेकिन अब केंद्र सरकार इसे लागू करना भूल गई है।

6. नस्लवाद की घृणित बुराई भारतीय लोकतंत्र को ग्रस रही थी। 1985 में 52वें संशोधन के माध्यम से नस्लवाद-विरोधी अधिनियम पारित होने से इस बुराई का काफी हद तक उन्मूलन हो गया है। लोग नस्लवाद के प्रति

अधिकाधिक सहिष्णु हो गए हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि भारत में राजनीतिक और सामाजिक समरसता का अभाव है। ^य

चेतना में वृद्धि होती है।

(3) वे चार तत्व क्या हैं जो भारतीय भाषा को विशिष्ट बनाते हैं? ^य

उत्तर भारतीय कई तरह के ताबीज़ बनाते हैं। इनका वर्णन इस प्रकार है: ^य

1. जनता के उच्च नैतिक मानदंड - केवल उच्च नैतिक मानदंड बनाए रखने वाले ही देश को स्वच्छ और मजबूत बना पाएंगे। यदि देश की जनता, राजनेता और शासक भ्रष्ट हैं, तो देश का पतन हो जाएगा। 2. एक सुशिक्षित ^य

नागरिक - केवल एक सुशिक्षित और शिक्षित नागरिक ही देश को स्वच्छ बना सकता है। केवल एक शिक्षित नागरिक ही देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को समझ सकता

है और उन्हें बदल सकता है। ^य

रक्षा नागरिकों के मन में सुसंगत अवधारणाएं पैदा करती है और उनकी इंद्रियों को जागृत करती है।

3. राजनीतिक स्वतंत्रताएँ - लोगों को अभिव्यक्ति, संगठन या ^य संघ बनाने, सभा करने और प्रेस की स्वतंत्रता होनी चाहिए। नागरिकों को सरकार की नीतियों की खुलकर आलोचना करने का अधिकार होना चाहिए। ^य

4. आर्थिक सिद्धांत - आर्थिक विज्ञान के बिना राजनीति विज्ञान निरर्थक है। व्यापक स्तर पर आर्थिक विज्ञान ^य

लोग रो रहे हैं। यह सही है, लेकिन आर्थिक समृद्धि संभव नहीं है। देश के नागरिकों के पुराने तौर-तरीके ही क्रांति ला सकते हैं।

दोस्तों का होना ज़रूरी है। इसका मतलब है कि कम से कम हर नागरिक के पास अपने प्रियजनों का भरण-पोषण करने लायक धन होना चाहिए।

सामाजिक मुद्दों के बारे में सोचना तभी संभव है जब व्यक्ति निर्णय लेने में सक्षम हो और किसी अन्य पर निर्भर न हो।

(4) भारतीय लोकतंत्र ने जीवन के हर पहलू को किस प्रकार विकसित किया है?

उत्तर भारतीय लोकतंत्र ने जीवन के हर पहलू, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक, के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी परिभाषा इस प्रकार है:

1. राजनीतिक विकास - भारत के लोगों को चुनावों के माध्यम से अपनी सरकार बनाने का अधिकार है। बहुलवादी व्यवस्था ही आगे बढ़ने का रास्ता है। हमारे पास चुनावों, प्रदर्शनों और सत्ता के प्रयोग के माध्यम से अपने राजनीतिक विचारों को व्यक्त करने की शक्ति है।

वे इसमें भाग लेते हैं

2. आर्थिक विकास- भारतीय क्रांति ने उद्यमिता और औद्योगीकरण को प्रोत्साहित किया। राशन कार्ड, नरेगा, आयुष्मान योजना जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास वर्तमान तक पहुँचा। औद्योगिक क्षेत्र का विकास और रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

3. रचनात्मक विकास- संविधान, जाति, धर्म या नस्ल के अनुसार जाति के आधार पर भेदभाव निषिद्ध है। सभी समान हैं। दर्जा दिया गया है। सुरक्षा का अधिकार सभी को उपलब्ध है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। विभिन्न योजनाएँ लागू की गई हैं।

4. सांस्कृतिक विकास- संविधान लोगों को अपने धर्म का पालन करने, अपनी भाषा बोलने और अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करने की अनुमति देता है। स्वतंत्रता प्रदान की गई। भारत की सांस्कृतिक अखंडता की रक्षा की गई। संविधान के अंतर्गत राज्यों को विशेष अधिकार दिए गए। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हैं। संक्षेप में कहें तो भारतीय लोकतंत्र ने बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को समान अधिकार और स्वतंत्रता दी है। इसे सभी ओर से अस्वीकार कर दिया गया है।

(5) भारतीय नस्लवाद से प्रभावित महिलाओं को प्राधिकारियों द्वारा संरक्षण दिया जाना चाहिए।

उत्तर- 1. भारत में लोकतंत्र की स्थापना के बावजूद, देश अभी भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। यह देश बहुत रचनात्मक देश है और देश के कुछ हिस्सों में तानाशाह के प्रति नफरत पैदा करने में कामयाब नहीं हो पाया है। भारत में आदिवासी और आदिवासी सरकार के लोग भारतीय लोगों को भारतीय समाज का हिस्सा नहीं बना सके। इसी कारण ये लोग सक्रिय रूप से सरकार विरोधी गतिविधियों में लगे हुए हैं।

1. हमारा देश स्थानीय सरकारों को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें अधिक प्रशासनिक शक्तियां प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

केंद्र सरकार ऐसा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमारे देश में, केंद्र सरकार अक्सर इन इकाइयों के प्रशासनिक कार्यों की उपेक्षा करती है। उदाहरण के लिए, भारत में 1967 तक गठित केंद्र सरकारों ने जो गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं, वे दमनकारी थीं। भारत और कई अन्य देशों में महिलाओं का सम्मान कम है।

क्रांति आर्थिक और राजनीतिक समुदायों में एकता की भावना पैदा करने में सफल नहीं रही।

यह विकेंद्रीकरण की वकालत करता है, लेकिन भारत और दुनिया के कई अन्य लोकतांत्रिक देश इस सिद्धांत का अलग-अलग तरीकों से पालन करते हैं।

नहीं कर सका.

2. तीसरा स्तंभ लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने से संबंधित है, जो हर लोकतांत्रिक देश में किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

यह आ रहा है। इस देश में लोकतंत्र की संस्थाओं को मजबूत करना ज़रूरी है। यह स्पष्ट है कि

इसका अर्थ है कि लोक सभा, प्रांतीय सरकारों जैसी लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से लोगों की भागीदारी और लोगों का नियंत्रण सुनिश्चित किया जाता है।

ग्राम पंचायतों, ग्राम अभ्यारण्यों और राज परिवर्षों जैसी संस्थाओं के साथ-साथ नगर निगमों, नगर परिषदों आदि जैसी स्थानीय संस्थाओं का भी विकास सुनिश्चित किया जाना चाहिए। यह तभी संभव है जब देश के समृद्ध और

सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों में शक्तिशाली लोगों का प्रभाव कम से कम किया जाना चाहिए।

(एस) नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़िए और उसके बाद दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

भारतीय संविधान सभा का चुनाव जुलाई 1946 में मंत्रिमंडलीय सुलह योजना के अनुसार हुआ था। संविधान सभा में 389 सदस्य थे, जिनमें से 292 ब्रिटिश भारतीय प्रांतों के प्रतिनिधि, 4 मुख्यमंत्रियों के प्रतिनिधि और 93 देशी रियासतों के प्रतिनिधि थे। इन प्रतिनिधियों का चुनाव अगस्त 1946 में प्रांतीय संविधान सभा द्वारा किया गया, जिससे संविधान सभा के सदस्यों की कुल संख्या 324 हो गई। भारतीय संविधान का इतिहास 09 यह हो गया। रविवार 1947 रिव

इसकी शुरुआत नवंबर 1946 से होती है और 26 नवंबर 1949 तक चलती है, जब संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने नवगठित संविधान पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार, भारत के संविधान को तैयार होने में 2 घंटे 11 महीने और 18 दिन लगे। 9 नवंबर 1946 को जब संविधान सभा की पहली बैठक हुई, तो अध्यक्षता सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ. राजेंद्र प्रसाद को दी गई।

इस बैठक की अध्यक्षता सरचिदानु दर्शन ने की। इस बैठक में 210 सदस्य उपस्थित थे। संविधान सभा के 11 सदस्य थे। कई बैठकें हुईं जिनमें विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई और 26 नवंबर, 1949 को संविधान तैयार किया गया।

हस्ताक्षर के बाद 26 जनवरी 1950 को संघ भंग हो गया और भारत गणराज्य बन गया।

संविधान को अपनाने के लिए यह दिन इसलिए भी चुना गया क्योंकि ब्रिटिश-भारतीय लोग 26 जनवरी 1930 से हर साल सिराज की मृत्यु की सालगिरह को 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाते आ रहे थे। इस संबंध में, संविधान सभा में एक और घटना घटी, जिसमें माननीय प्रधान मंत्री, जय निर्मल ने 22 जनवरी 1947 को एक प्रस्ताव पेश किया था, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि भारत के संविधान के संस्थापक को भारत कहा जा सकता है।

नीचे दिए गए सवालों का जवाब दें-

(1) विधान सभा की पिछली बैठक में कौन से सदस्य अनुपस्थित थे?

उत्तर- कुंभार = 389

□ उपस्थित सदस्य = 210

□ अनुपस्थित सदस्य = 389- 210 = 179

(2) क्या भारत के प्रथम राष्ट्रपति ने संविधान सभा के प्रथम सत्र की अध्यक्षता की थी?

उत्तर- नहीं, संविधान सभा की पहली बैठक (09 नवम्बर 1946) की अध्यक्षता सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ. सर्वदानु दर्शिनहा ने की थी।

(3) भारतीय राज्यों के उदय के क्या कारण थे?

पंजाब के सबसे उत्तरी राज्य प्रत्या, कपराथा, नाभा, राजुंद और फरीदकोट थे।

(4) PEPSU का क्या मतलब है? यह एक ऐसी जगह है जहाँ कोई भी संगठन बिना नाम के नहीं होता। आइए इसके बारे में बात करते हैं।

द्वारा किया गया था। यह आठ राज्यों का निगम (पीआरटीसी) आज भी पंजाब में कार्यरत है।

इसका गठन पेप्सू - पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्य संघ

(5) संविधान सभा के कार्य सत्र के दौरान औसतन कितने घंटे बैठकें हुईं?

उत्तर: संविधान का मसौदा तैयार करने में 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन लगेंगे (औसतन 35 महीने और 18 दिन)। 11 बैठकें।

औसतन, बैठकें = $35.18 \div 11 = 3.19$ घंटे के बाद आयोजित की गईं।

(6) उपर्युक्त नामों में से किसने भारतीय गणराज्य की राजनीति में कौन-कौन से पद संभाले?

उत्तर- डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति और भारत के पहले प्रधानमंत्री हैं।

रब्राजियन ने पदभार संभाला।

ACTIVITY

1. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में दुनिया के सामने आने वाली कुछ चुनौतियाँ नीचे दी गई हैं। इनके आगे उन देशों के नाम लिखिए जो इस चुनौती का सामना कर रहे हैं। एक से ज़्यादा चुनौतियों का सामना करना आम बात है और अगर किसी देश को एक से ज़्यादा चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ रहा है, तो उस देश का नाम लिया जा सकता है।

इंतज़ार।

शहर का नाम या दिन की चुनौतियाँ	जिन देशों को इसमें शामिल नहीं किया गया है शहर बचाव के लिए आ गया है।
1. क्रिएटिव सुनक्त सुनभू धी	का, नेपा
2. ऑक्टोनॉट्स, सौतेले भाई, बेटियाँ	उनके नाम हैं चीन, उत्तर कोरिया, ईरान, रूस।
3. लोकतांत्रिक संस्थाओं के कामकाज के संबंध में	पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, म्यांमार
4. संघीय सरकारों या देशों में शक्तियाँ पुनःकेंद्रीकरण के संबंध में	इथियोपिया, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका
5. स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों के संबंध में	बांग्लादेश, बांग्लादेश
6. देवताओं के बीच एकता बनाने के संबंध में	भारत, दक्षिण अफ्रीका, लीबिया
7. बड़े पैमाने पर रबर स्टैम्प	इराक, सऊदी अरब, नाइजीरिया, भारत

2. आइए अब भारतीय लोकतंत्र के सामने मौजूद कुछ मुद्दों पर विचार करें। नीचे दिए गए बॉक्स में, भारतीय लोकतंत्र

आगामी कार्यक्रमों के नाम निम्नलिखित हैं। इन कार्यक्रमों की आवृत्ति और तीव्रता पर विचार नहीं किया गया है।

निम्नलिखित को महत्व (कार्य) के आधार पर क्रमबद्ध कीजिए। भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में इन गुणों के उदाहरण दीजिए और क्रमबद्ध करने के कारण भी बताइए।

उसी दिन।	प्राह (करना) मे एक लड़की हूँ।	उदाहरण (घटना)	वरीयता का कारण
1.	संप्रदायवाद	उदाहरण (घटना) 1947 में पंजाब और बुंगा के दौरान उच्च स्तर पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रयासों के कारण भारी हिंसा, उत्पात और उत्पीड़न हुआ है। 1984 रेड क्रॉस आई	सामाजिक समुदाय नष्ट हो जाता है और बड़े पैमाने पर हिंसा होती है। जान-माल का नुकसान होता है। क्रांति की जड़ें मजबूत हैं। उत्पीड़ितों को शांत करने के सरकारी प्रयासों के कारण भारी हिंसा, उत्पात और उत्पीड़न हुआ है। यह एक गदा है.
2.	भ्रष्टाचार	कोमेट घोटाला, 2जी घोटाला, चारा घोटाला	सरकार पर भरोसा कम होता है। देश का विकास स्तर गिरता है। इसका अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है।
3.	गरीबी	स्वतंत्रता के बाद देश के कई दुनिया के दिल में गरीबी और भूख	गरीबी राजनीतिक जागरूकता को कम करती है, वोट खरीदने की प्रवृत्ति को बढ़ाती है। ज़्यादातर गरीब लोग वे अंततः अमीर बन जाते हैं।
4.	जातिवाद	के शासन, ऊँच-नीच व्यवस्था और ज़मीनी स्तर पर हिंसा के खिलाफ़ है।	सरकार विभाजित है। असुरक्षा बढ़ रही है, जो सीधे तौर पर कानून
5.	शहरों की संख्या में वृद्धि और शहरी आबादी में वृद्धि (रेपुंडा शहरों से प्रवास)		प्राकृतिक संसाधनों और नौकरियों पर दबाव आवास की कमी और आवास संबंधी समस्याएं वहाँ हैं।
6.	रहुनसा	चुनाव के बाद हिंसा, भोपाल गैस त्रासदी विद्रोह	लोकतांत्रिक प्रक्रिया में बाधाएं उत्पन्न की जा रही हैं और भय का माहौल पैदा किया जा रहा है।
7.	निरक्षरता	आज बहुत से लोग निरक्षर हैं और बुनियादी नहीं करते। वे भ्रमित हैं.	शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर सकते। निरक्षर लोग ज़िम्मेदारी महसूस

योगदान: हरिद्रिंदर रसुंग (राज्य संसाधन व्यक्ति, रचनात्मक अनुसंधान संस्थान) एससीईआरटी पंजाब,
रणजीत कौर (ए.सी. इतिहास) एस.एस.एस.एस.के. छीना बेट, गुरदासपुर और
निदीप कौर (एस.एस. रेस्ट्रैस) एस.के.एस.एस.एस. दाखा उर्धाना.